IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पॉवर का योगदान

Pooja Kumari & Dr. Prerana Bhaduli

1. Research Scholar, Department of Political Science, Mahatma Gandhi Central University, Motihari, Bihar

2. Assistant Professor, Department of Political Science, Mahatma Gandhi Central University, Motihari, Bihar

21वीं सदी में, हिन्द-प्रशांत क्षेत्र विश्व की राजनीति, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा में महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है| विशेष रूप से इस क्षेत्र में भारत, चीन, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के बीच बढ़ती सामरिक और आर्थिक लड़ाई में सांस्कृतिक प्रभाव तथा सॉफ्ट पॉवर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है| यह शोध-पत्र हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पॉवर की भूमिका का विश्लेषण करता है| विशेष रूप से भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को केंद्र में रखते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि किस प्रकार सांस्कृतिक संसाधन, ऐतिहासिक विरासत, शिक्षा, योग, बौद्ध धर्म, प्रवासी भारतीयों और जन संपर्क इस क्षेत्र में भारत की छवि और प्रभाव को सुदृढ़ करते है| शोध के परिणामों से पता चलता है की हार्ड पॉवर की तुलना में सॉफ्ट पॉवर अधिक स्थायी, स्वीकार्य और कारगर है|

मुख्य शब्द- सांस्कृतिक कूटनीति, सॉफ्टपॉवर, मूल्य, संस्कृति, ऐतिहासिक विरासत

हिन्द-प्रशांत क्षेत्र वर्त्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीती का एक केन्द्रीय अवधारणा बन चुका है| यह क्षेत्र हिन्द महासागर से लेकर पश्चिमी और मध्य प्रशांत महासागर तक फैला हुआ है तथा विश्व की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या, प्रमुख समुद्री व्यापार मार्गो और उभरती अर्थव्यवस्थाओं को समाहित करता है (Dev, 2022)| Babu,(2015) ने भी बताया है कि हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में ऊर्जा कि प्रचुर मात्रा विद्धमान है| पारंपरिक रूप से यह क्षेत्र सैन्य रणनीति, समुद्री सुरक्षा और आर्थिक प्रतिस्पर्धा के लिए जाना जाता रहा है, परन्तु हाल के वर्षो में सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पॉवर इसके महत्वपूर्ण आयाम के रूप में उभरे है| अपनी 'एक्ट ईस्ट पालिसी' और 'इंडो-पैसिफिक विज़न' के माध्यम से भारत ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है| लेकिन केवल सैन्य और आर्थिक बल पर्याप्त नहीं है, बल्कि सॉफ्ट पॉवर और सांस्कृतिक कूटनीति दोनों भी महत्वपूर्ण है| जोसेफ़ नाई ने पहली बार 1990 में अपनी पुस्तक **'बाउंड टू लीड'** में सॉफ्ट पॉवर शब्द का प्रयोग किया (Nye,2017)| उन्होंने सॉफ्ट पॉवर की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमे कहा गया कि किसी देश की आकर्षण क्षमता उसकी नीतियों, मूल्यों और संस्कृति के माध्यम से दुसरे देशो को प्रभावित

कर सकती है (Nye,2004)| भारत को बॉलीवुड़, योग, आयुर्वेद, बौद्ध धर्म, भोजन, कला और लोकतान्त्रिक परंपरा जैसी कई सांस्कृतिक संपदाओ के कारण हिन्द-प्रशांत देशो के लिए एक प्राकृतिक साझेदार माना जाता है| जोसेफ़ नाई के इस अवधारणा से यह स्पष्ट होता है कि कोई भी राष्ट्र केवल बल प्रयोग या आर्थिक दबाव से नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति, मूल्यों और नीतियों की आकर्षकता के माध्यम से भी अन्य देशों को प्रभावित कर सकता है| हिन्द-प्रशांत जैसे विविधतापूर्ण क्षेत्र में, जहाँ भाषाई, धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता अत्यधिक है, इस लिए यहाँ सॉफ्ट पॉवर की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है (Nye,2017)|

सैद्धांतिक ढांचा

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो में सॉफ्ट पॉवर की अवधारणा बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है| जोसेफ़ नाई ने कहा है कि सॉफ्ट पॉवर वह क्षमता है जिसके माध्यम से कोई देश अन्य देशो को अपनी संस्कृति, राजनीतिक मूल्यों और विदेश नीति के आकर्षण से प्रभावित करता है| इसमे कोई सैन्य बल या सैन्य दबाव का प्रयोग भी नहीं किया जाता| इस शक्ति को 'आकर्षण की शक्ति' कहा जा सकता है, जो किसी देश की कठोर सैन्य या आर्थिक शक्ति से अलग है (Nye,2021)| जोसेफ़ नाइ ने '**सॉफ्ट पॉवर: द इवोल्यूशन ऑफ कंसेप्ट**' में बताया है, सॉफ्ट पॉवर का मूल सिद्धांत यह है कि अगर दूसरो को किसी देश की संस्कृति, मूल्य और नीतियाँ आकर्षक लगती है तो वे स्वेच्छा से उस देश के साथ सहयोग करना चाहेंगे| इस प्रकार, सॉफ्ट पॉवर एक दीर्घकालीन और स्थायी प्रभाव डालता है, जो केवल आर्थिक या सैन्य प्रेरणा से संभव नहीं होता| उन्होंने बताया की सॉफ्ट पॉवर का स्रोत तीन मुख्य क्षेत्रो से आता है- राजनीतिक मूल्य, संस्कृति और विदेश नीति| यदि किसी देश की संस्कृति दुनिया भर में सम्मानित है, उसका राजनीतिक मूल्य लोकतंत्र और मानवाधिकारों पर आधारित है, और उसके विदेश नीति नैतिक और सहयोगी है, तो निश्चित रूप से दुसरे देश उसके तरफ आकर्षित होंगे|

सॉफ्ट पॉवर का सबसे बड़ा साधन सांस्कृतिक कूटनीति है| यह एक प्रकिया है जिसके माध्यम से देश अपनी कला, भाषा, शिक्षा, धर्म और परंपराओ को साझा करके विश्वास और सहयोग का वातावरण बनाते है| सांस्कृतिक कूटनीति का लक्ष्य सिर्फ सांस्कृतिक आदान-प्रदान नहीं है, यह राजनीतिक, आर्थिक और दीर्घकालीन संबधो को भी मजबूत करना चाहती है| उदाहरण के लिए, अमेरिका ने हॉलीवुड फिल्मों और फूलब्राइट प्रोग्राम के माध्यम से अपनी शिक्षा और संस्कृति को दुनिया भर में फैलाया| फूलब्राइट कार्यक्रम ने अमेरिका को शिक्षा और शोध के क्षेत्र में एक अग्रणी शक्ति बनाया, जबकि हॉलीवुड ने अमेरिकी जीवनशैली और मूल्यों को आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया (Bettie, 2015)| इसी तरह चीन ने अपनी भाषा और संस्कृति को अपने कन्फ़्यूशियस संस्थानों के माध्यम से प्रचारित किया (Lai &Lu, 2012)| इन संस्थानों ने चीनी भाषा सिखाने और चीनी संस्कृति को समझाने का अवसर दिया, जिससे चीन की विश्वव्यापी छवि मजबूत हुई| Iwabuchi (2018) ने बताया है कि जापान ने अपनी पॉप संस्कृति, एनीमे, फैशन और तकनीकी नवाचारों को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाने के लिए 'Cool Japan' नीति लागु की| इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है की सांस्कृतिक कूटनीति सिर्फ सांस्कृतिक पहचान का प्रचार नहीं है, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक रणनीतिक उपकरण भी है|

भारत में सॉफ्ट पॉवर और सांस्कृतिक कूटनीति का महत्त्व और भी बढ़ जाता है| भारत की सभ्यता हजारो वर्षो पुरानी है और इसकी विविधता इसे दूसरें देशों से अलग बनाती है| आयुर्वेद और योग भारत की सबसे बड़ी

सांस्कृतिक धरोहरों में से है, जिन्होंने देश को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई है| 2014 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 जून को अन्तराष्ट्रीय योग दिवस घोषित करना भारत की मजबूत शक्ति का एक बड़ा उदाहरण है| इसी तरह, पारंपरिक चिकित्सा और आयुर्वेद ने भारत को स्वास्थ्य कूटनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है| भारत में बौद्ध धर्म भी सांस्कृतिक कूटनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है| भारत बौद्ध धर्म का जन्म स्थान है और बौद्ध धरोहर भारत को सांस्कृतिक रूप से दक्षिण-पूर्व एशिया के कई देशो जैसे थाईलैंड, म्यांमार, वियतनाम और जापान से जोड़ती है| नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्जीवन भी भारत की बौद्ध कूटनीति का प्रतिक है| इसके अलावा, बॉलीवुड या भारतीय फ़िल्म उधोग ने भारत की सॉफ्ट पॉवर को दुनिया भर में प्रसारित करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है| इंडोनेशिया, मलेशिया और फिजी जैसे देशो में भारतीय फिल्में और संगीत बहुत लोकप्रिय है| भारत की लोकतांत्रिक परंपरा तथा बहुलवादी समाज इसे और भी अधिक आकर्षक बनाता है| भारत की विविधता इसे दुनिया में सबसे बड़ा लोकतंत्र बनाती है| भारत अपने विविध धर्मो, भाषाओं और संस्कृतियों के साथ वैश्विक सहिष्णुता और बहुलता का प्रतीक है| हिन्द-प्रशांत के देशो को यह मूल्य काफी अच्छा लगता है क्योंकि वे भारत को एक विश्वसनीय और सहयोगी साझेदार मानते है| सैद्धांतिक रूप से, भारत की विदेश नीति में सॉफ्ट पॉवर और सांस्कृतिक कूटनीति का महत्त्व स्पष्ट है| भारत की सॉफ्ट पॉवर के मुख्य स्रोत योग, आयुर्वेद, बौद्ध धर्म, भोजन और लोकतान्त्रिक मूल्य है| अमेरिका, चीन और जापान के उदाहरण भी सांस्कृतिक कूटनीति को वैश्विक राजनीती में एक रणनीतिक उपकरण बनाते है| भारत की सभ्यता और संस्कृति हिन्द-प्रशांत क्षेत्र पर लम्बे समय तक प्रभाव डाल सकती है|

शोध अध्ययन की विधियाँ

हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पॉवर की भूमिका का विश्लेषण करने के लिए इस शोध पत्र में मुख्यतः गुणात्मक, विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध विधियों का प्रयोग किया गया है| यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जो मुख्य रूप से पुस्तके, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट और विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों पर आधारित है| गुणात्मक प्रणाली का उपयोग करके सांस्कृतिक तत्वों जैसे बौद्ध धर्म, भारतीय विरासत, शिक्षा और प्रवासी भारतीयों के प्रभाव का व्यापक अध्ययन किया गया है जिससे सॉफ्ट पॉवर की प्रभावशीलता को समझा जा सके| विश्लेषणात्मक और वर्णात्मक दृष्टिकोण से भारत, चीन, अमेरिका और जापान की नीतियों और रणनीतियों का तुलनातमक अध्ययन किया गया है| साथ ही साथ हिन्द- प्रशांत क्षेत्र और सॉफ्ट पॉवर की भूमिकाओ का भी अध्ययन किया गया है|

हिन्द-प्रशांत में सॉफ्ट पॉवर की भूमिका

हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में सॉफ्ट पॉवर की भूमिका महत्वपूरण है क्योंकि यह सिर्फ राजनीतिक या सैन्य शक्ति पर नहीं बल्कि सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों के माध्यम से देशों को एकजुट करता है| सॉफ्ट पॉवर का सबसे बड़ा योगदान विश्वास निर्माण में है| जब कोई देश अपनी संस्कृति, शिक्षा, स्वास्थ्य और परंपराओ के माध्यम से दूसरों पर प्रभाव डालता है, तो यह आपसी विश्वास और सहयोग को जन्म देता है| योग, आयुर्वेद और बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत ने इस क्षेत्र में धार्मिक माहौल बनाया है| सॉफ्ट पॉवर क्षेत्रीय स्थिरता में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है| साझा विरासत और सांस्कृतिक कूटनीति देशों को एक दुसरे के करीब लाती है, जिससे संघर्ष कम होता है और स्थिरता बढती है| उदाहरण के लिए, बौद्ध धर्म ने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों को जोड़ा है| इसके

अलावा सॉफ्ट पॉवर सैन्य तनाव में भी कमी करके आर्थिक सहयोग बढ़ाने में सहायता करता है| यह शिक्षा, व्यापार और पर्यटन क्षेत्रो में भी सहयोग को बढ़ता है| बॉलीवुड, भारतीय भोजन और प्रवासी भारतीय समुदाय ने आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ाया है| जब देशो के बीच शैक्षिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ता है तो वे एक दूसरे से बातचीत करते है और एक दूसरे को समझते है| ये बातचीत युद्ध और तनाव को कम करने में मदद करता है| इस प्रकार, सॉफ्ट पॉवर हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग को सिर्फ रणनीतिक या आर्थिक आधार पर ही नहीं बल्कि मानवीय और नैतिक आधार पर भी मजबूत करता है|

इतिहास

हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में सांस्कृतिक संबंधो का अत्यंत प्राचीन और व्यापक इतिहास है| यह कोई नई कूटनीति नहीं है बल्कि हजारो वर्षो से चले आ रहे सांस्कृतिक हस्तांतरण और समुद्री मार्गो की निरंतरता है| प्राचीन भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच समुद्री रास्ते के माध्यम से धार्मिक विचार, भाषाई परंपराएँ, साहित्यिक कहानियाँ और कला शैलियों का आदान-प्रदान हुआ| इन संपर्को ने सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधो को भी बढाया| बौद्ध धर्म भारत से श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, कम्बोडिया और इंडोनेशिया तक फैल गया| बौद्ध भिक्षुओं ने अशोक के समय से ही समुद्री मार्गो से इन देशों में जाकर धर्म का प्रचार किया| आजकल थाईलैंड और म्यांमार में बौद्ध धर्म की परंपराएँ भारतीय मूल की धरोहर है| इंडोनेशिया के बोरोबुदुर स्तूप और कम्बोडिया के अंकोरवाट मंदिर भी भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव का जीवंत उदाहरण है| दक्षिण-पूर्व एशिया की संस्कृति में भी भारतीय महाकाव्य रामायण और महाभारत गहराई से समाहित है| भारत के महाकाव्य का स्थानीय संस्करण थाईलैंड में 'रामाकियन' और इंडोनेशिया में 'रामायण बैले'(बिना संवाद वाला नृत्य-नाटक) है| कम्बोडिया और लाओस में भी लोक कथाओं और नृत्य-नाट्य परंपराओं में रामायण की कहानिया जीवित है| यह दिखता है कि भारतीय साहित्य परंपरा ने विदेशी सांस्कृतिक पहचान बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है| संस्कृत भाषा भी बहुत प्रभावशाली है| संस्कृत में प्राचीन काल में दक्षिण-पूर्व एशिया से सम्बंधित बहुत सरे लेख लिखे गए थे| संस्कृत को भारत के प्राचीन राजवंशो ने राजकीय भाषा बनाया| आज भी थाईलैंड और कम्बोडिया की भाषाओं में कुछ शब्द संस्कृत से आते है| यह भाषाई प्रभाव भारत की बौद्धिक परंपरा और सांस्कृतिक विविधता का प्रमाण है|

समुद्री मार्ग भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच सांस्कृतिक संपर्को के आधार थे| पुराने समय में स्पाइस रूट और सिल्क रूट दोनों सांस्कृतिक हस्तांतरण के माध्यम थे| भारतीय व्यापारी मसाले, वस्त्र और धातु लेकर जाते थे, वहीं स्थानीय लोग भारतीय धर्म, कला और भाषा को अपनाते थे| भारत को श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड और इंडोनेशिया से जोड़ने में समुद्री मार्गो का महत्वपूर्ण योगदान था| इन सांस्कृतिक संबंधो ने दिखाया कि भारत की सॉफ्ट पॉवर नया नहीं है बल्कि एक ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है| भारत पर प्राचीन काल से ही योग, बौद्ध धर्म, साहित्य और भाषा का प्रभाव रहा है| योग दिवस, आयुर्वेद, बॉलीवुड और लोकतान्त्रिक मूल्यों के माध्यम से भारत आज भी सॉफ्ट पॉवर का प्रयोग करता है, जो एक ऐतिहासिक परंपरा का विस्तार है| हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में भारत के सांस्कृतिक संपर्को का इतिहास दिखाता है कि भारत की सभ्यता ने इस क्षेत्र को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से भी बहुत प्रभावित किया है| यह ऐतिहासिक दृष्टिकोण भारत की सॉफ्ट पॉवर रणनीति और सांस्कृतिक कूटनीति को समझने में मदद करता है|

भारत में सांस्कृतिक कूटनीति के साधन

कई तरीकों से भारत ने हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में अपनी सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पॉवर को मजबूत किया है| प्रमुख स्तंभों में योग और आयुर्वेद, बौद्ध धर्म, मीडिया और बॉलीवुड तथा प्रवासी भारतीय समुदाय शामिल है| ये उपकरण भारत की सभ्यता और आधुनिक पहचान को बढ़ाते हुए क्षेत्रीय देशों के साथ सहयोग और विश्वास का आधार बनाते हैं|

योग और आयुर्वेद- आयुर्वेद और योग भारत की दो सबसे बड़ी सांस्कृतिक धरोहरों में से है| 2014 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 जून को अन्तराष्ट्रीय योग दिवस घोषित करना भारत की सांस्कृतिक कूटनीति में एक ऐतिहासिक सफलता थी| योग केवल शारीरिक स्वास्थ्य का उपाय नहीं है, यह मानसिक शांति, संतुलन और विश्व सद्भाव को भी प्रोत्साहित करता है| योग से भारत की सकारात्मक छवि को हिन्द-प्रशांत क्षेत्र के देशों ने व्यापक रूप से अपनाया है| भारत की स्वास्थ्य कूटनीति भी आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा से मजबूत होती है| भारत के सॉफ्ट पॉवर को स्वास्थ्य और जीवन शैली के क्षेत्र में विस्तार देने के लिए कई देशों में आयुर्वेदिक चिकित्सा केंद्र बनाये गये है|

बौद्ध कूटनीति- भारत ने (बौद्ध धर्म को जन्म स्थान) अपनी विरासत को हिन्द-प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ संबंधो को मजबूत करने में प्रयोग किया है| जापान, म्यांमार, थाईलैंड, श्रीलंका जैसे देशो में बौद्ध धर्म की गहरी जड़े है, और भारत ने इस साझा धार्मिक-सांस्कृतिक विरासत को कुटनीतिक पुल के रूप में इस्तेमाल किया है| भारत की बौद्ध कूटनीति के उदाहरणों में नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्जीवन, बौद्ध तीर्थस्थलों का विकास और अन्तराष्ट्रीय बौद्ध सम्मलेन शामिल हैं| इन कदमों ने भारत को अध्यात्मिक और सांस्कृतिक साझेदारी में जोड़ने का अवसर दिया है|

बॉलीवुड और मीडिया- भारतीय फिल्म उधोग यानीं बॉलीवुड ने भारत की सॉफ्ट पॉवर को दुनिया भर में प्रसारित करने में महतवपूर्ण योगदान दिया है| इंडोनेशिया, मलेशिया और फिजी जैसे देशो में भारतीय फिल्में और संगीत बहुत लोकप्रिय है| भारतीय जीवन शैली, भावनाओं और सांस्कृतिक विविधता को बॉलीवुड ने आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है| भारत की सांस्कृतिक पहचान को डिजिटल प्लेटफार्म जैसे नेटफ्लिक्स और अमेज़न प्राइम ने पूरी दुनिया में भारतीय सामग्री को पहुँचाया है| हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में भी भारतीय संगीत और नृत्य एक दुसरे से संपर्क करते हैं|

प्रवासी भारतीय- भारत की सॉफ्ट पॉवर जमीनी स्तर पर प्रवासी भारतीय समुदाय से मजबूत होती है| भारतीय लोग बहुत से हिन्द-प्रशांत देशों जैसे फिजी, मॉरीशस, सिंगापूर और ऑस्ट्रेलिया में रहते है| ये समुदाय स्थानीय समाज में भारतीय संस्कृति, भोजन, त्यौहार और परंपराओं को बरकरार रखते है| प्रवासी भारतीय सांस्कृतिक सेतु का कम करते हैं और भारत की सकारात्मक छवि को प्रस्तुत करते है| वे सांस्कृतिक पहचान को बचाते हैं और धन तथा राजनितिक सहयोग में योगदान भी देते है|

अन्य देशों की सांस्कृतिक कूटनीति के साथ भारत का तुलनात्मक विश्लेषण

हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में कई दशों ने अपनी सॉफ्ट पॉवर और सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से प्रभाव डालने की कोशिश की है| चीन, जापान और अमेरिका इसके बड़े उदहारण है, जिनकी सांस्कृतिक कूटनीति भारत से बहुत अलग है| चीन में सन 2000 के बाद सॉफ्ट पॉवर शब्द बहुत ही तेजी से लोकप्रिय होने लगा| चीनी नेताओ ने इसे अपने राष्ट्रीय रणनीति में शामिल किया ताकि चीन की 'चाइना थ्रेट' की अवधारणा को कम किया जा सके| इस प्रयास का उदेश्य

चीन की छवि को शांतिपूर्ण उदय के रूप में प्रस्तुत करना था| तत्पश्चात चीन ने 'कन्फ़्यूशियस इंस्टिट्यूट' का निर्माण किया, जिसके माध्यम से अपनी भाषा और संस्कृति को दूसरों तक पहुँचाने का काम किया (Lai &Lu, 2012)| चीनी भाषा की शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम और अकादमिक सहयोग को इन संस्थानों ने बढ़ावा देना चाहा| हालाँकि, कई देशों में इन्हे सिर्फ सांस्कृतिक संस्थान ही नहीं, बल्कि राजनीतिक प्रभाव और प्रचार के साधन के रूप में देखा गया| कुछ देशों जैसे अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और यूरोप ने इन संस्थानों पर निगरानी रखी या उन्हें बंद कर दिया| यह स्पष्ट है कि चीन की सांस्कृतिक कूटनीति अक्सर सक और बहस का विषय रही है| ठीक उसी प्रकार अमेरिका की सॉफ्ट पॉवर शिक्षा पर केन्द्रित है, जो तकनीकी, मीडिया और नवाचार पर आधारित है| हॉलीवुड फिल्मों का व्यापक प्रभाव, सिलिकॉन वैली की तकनीकी प्रगति और अमेरिकी विश्वविद्यालयों की वैश्विक प्रतिष्ठा ने अमेरिका को विश्वव्यापी आकर्षण का केंद्र बनाया| Bettie, 2015 ने बताया है कि अमेरिकी फूलब्राइट प्रोग्राम सार्वजानिक कूटनीति के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है, जिसकी शुरुआत 1946 में हुई थी| फूलब्राइट प्रोग्राम जैसे शैक्षिक आदान-प्रदान कार्यक्रमो ने अमेरिका की सांस्कृतिक नीति को मजबूत किया| हालाँकि, अमेरिकी सॉफ्ट पॉवर को कुछ क्षेत्रो में आलोचना मिली है क्योंकि यह अक्सर उसकी विदेश नीति और सैन्य हस्तक्षेपो से प्रभावित होता है| अगर जापान में देखा जाय तो जापान ने अपनी पॉप कल्चर को सॉफ्ट पॉवर का आधार बनाया| जापान का पॉप कल्चर आधुनिक जापानी समाज की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है| इसमे जापानी पॉप म्यूजिक, एनीमे (जापानी एनिमेसन शैली) और मंगा (जापानी कॉमिक्स और ग्राफिक नोवेल्स), विडियो गेम्स, फैशन इत्यादी शामिल है, जो युवा लोगो के बीच बहुत लोकप्रिय है (Iwabuchi, 2018)| जापान ने अपनी आधुनिक सांस्कृतिक पहचान को Cool Japan नीति के माध्यम से दुनिया को दिखाया| इससे जापान को तकनीकी रूप से उन्नत और सांकृतिक रूप से आकर्षक देश के रूप में चित्रित किया गया| लेकिन जापान की सांस्कृतिक कूटनीति मुख्यतः मनोरंजन और उपभोक्तावाद पर आधारित है, जो परंपरागत धार्मिक या दार्शनिक मूल्यों से दूर है|

भारत हमेशा से एक ऐसा देश रहा है जिसके पास अपार सॉफ्ट पॉवर रही है| जैसा की इस तथ्य से स्पष्ट होता है की चीन के उदय के विपरीत, भारत के उदय को कई देशों में भय और आशंका के साथ नहीं देखा जा रहा है| दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में भारत की सॉफ्ट पॉवर बहुत अधिक है क्योंकि उनका साझा विरासत और सभ्यता से गहरा सम्बन्ध है, और अब उन्हें भारत के सभ्यतागत पडोसी कहा जाता है| दुसरे देशों की तुलना में भारत की सांस्कृतिक कूटनीति कम विवादास्पद और अधिक लोकप्रिय है| भारत अपनी शक्ति को योग, आयुर्वेद, बौद्ध धर्म, बॉलीवुड और प्रवासी भारतीय समुदाय के माध्यम से प्रदर्शित करता है (Purushothaman, 2010)| ये साधन आध्यात्मिकता, शांति, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक विविधता पर आधारित है, जो राजनितिक दबाव या प्रचार से मुक्त हैं| 2 अक्टूबर 2016 को महात्मा गाँधी की जयंती के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रवासी भारतीय केंद्र का उद्घाटन करते हुए कहा कि "भारतीय प्रवासी समुदाय को केवल उनकी संख्या के आधार पर ही नहीं, बल्कि उनकी शक्ति के आधार पर भी देखा जाना चाहिए| मोदी ने कहा कि वर्षो से ब्रेन ड्रेन शब्द प्रचलन में है| लेकिन अगर हम प्रवासी समुदाय को अपनी शक्ति के रूप में देखे तो हम इसे ब्रेन गेन में बदल सकते है|" Srinivas,(2019)| ज्यादातर लोग भारत की सांकृतिक कूटनीति को सकारात्मक मानते है क्योंकि यह देशों के बीच विश्वास और सहयोग को बढाता है| तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारत की सांस्कृतिक कूटनीति अधिक स्थायी, नैतिक और स्वीकार्य है, जबकि चीन और अमेरिका की सांस्कृतिक कूटनीति बहस और आलोचना का विषय बन सकती है|

भारतीय सॉफ्ट पॉवर की चुनौतियाँ

भारत की सॉफ्ट पॉवर और सांस्कृतिक कूटनीति हिन्द-प्रशांत क्षेत्र पर बड़ा प्रभाव डाल रही है, लेकिन इसके सामने कई चुनौतियां है| **हार्ड पॉवर की बढती भूमिका** सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण चुनौती है| आज की भू-राजनीतिक स्थिति में सिर्फ सांस्कृतिक आकर्षण पर्याप्त नहीं है, सैन्य शक्ति, आर्थिक निवेश और तकनीकी प्रभुत्व देशों की प्रतिस्पर्धा में महत्वपूर्ण होते जा रहे है| भारत की सांस्कृतिक कूटनीति बहुत लोकप्रिय और विवादास्पद है, जो इसे चुनौतीपूर्ण बनता है| अत: इसे हार्ड पॉवर के साथ संतुलित नहीं किया जायेगा तो इसका प्रभाव बहुत कम होगा| हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतीयाँ जैसे तकनीकी प्रभुत्व की दौड, दक्षिण चीन सागर में तनाव और इंडो-पसिफ़िक में नौसैनिक संघर्ष ये दिखाती है कि केवल सॉफ्ट पॉवर से दीर्धकालीन रणनीतिक संतुलन संभव नहीं है| **संसाधनों और संस्थागत ढांचे की कमी** दूसरी चुनौती के रूप में सामने आती है| भारत में ICCR जैसे सांस्कृतिक संस्थानों को सीमित पहुँच है और सांस्कृतिक कूटनीति के लिए बहुत कम बजट है| इसके विपरीत, चीन और अमेरिका जैसे देश अपनी सांस्कृतिक नीतियों में बहुत अधिक खर्च करते है, जिससे वे अधिक व्यापक प्रभाव डाल सकते हैं| **तीसरी चुनौती है चीन की प्रतिस्पर्धा**| चीन ने हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में अपनी सांस्कृतिक और राजनीतिक उपस्थिति को कन्फ़्यूशियस इंस्टिट्यूट और बड़े पैमाने पर आर्थिक निवेश के माध्यम से मजबूत किया है| चीनी भाषा, शिक्षा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने कई देशों मे गहरी पैठ बनाई है| भारत की सांस्कृतिक कूटनीति आमतौर पर स्वीकार्य है और विवादास्पद नहीं है, लेकिन संसधानों की कमी के कारण देश ने चीन की तरह व्यापक पहुच नहीं बना पाई है| इसके **अलावा दीर्घकालिक रणनीति का नहीं होना** भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है| भारत में सांस्कृतिक कूटनीति अक्सर प्रतीकात्मक घटनाओं जैसे योग दिवस या बौद्ध सम्मेलन तक सीमित रहती है| इन पहलों के साथ साथ इन्हें लम्बे समय तक चलने वाली रणनीति और संस्थागत ढांचे से जोड़ना चाहिए| भारत को निरंतरता और स्थायित्व सुनिश्चित करना होगा ताकि सांस्कृतिक कूटनीति को अपनी विदेश नीति का प्रमुख आधार बना सके| भारत के सॉफ्ट पॉवर को स्थायी और कारगर बनाने का एकमात्र उपाय इन चुनौतियों का समाधान करना है|

निष्कर्ष और सुझाव

भारत की सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पॉवर की हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में भूमिका स्पष्ट रूप से यह दिखाती है कि किसी भी देश की वैश्विक पहचान उसकी सभ्यता, परंपरा और मानवीय मूल्यों पर भी निर्भर होती है, न की सिर्फ सैन्य या आर्थिक शक्ति पर| भारत ने इस क्षेत्र में अपनी सकारात्मक छवि को योग, आयुर्वेद, बौद्ध धर्म, भोजन, कला और प्रवासी भारतीय समुदाय के माध्यम से बनाया है| इन साधनों ने सैन्य तनाव को कम करने, क्षेत्रीय स्थिरता, विश्वास निर्माण और आर्थिक सहयोग को बढ़ाने में योगदान दिया है| भारत की सांस्कृतिक कूटनीति जो शांति, चिकित्सा, आध्यात्मिकता और बहुलता पर आधारित है, अधिकांश लोगो द्वारा मान्यता प्राप्त है और कम विवाद का विषय बनती है| यधपि, चुनौतियां कम नहीं हैं| चीन और अमेरिका जैसे देशों ने अपनी सांस्कृतिक कूटनीति को हार्ड पॉवर के साथ जोड़ा है, इससे उनका प्रभाव बढ़ गया है| भारत की सांस्कृतिक कूटनीति अपेक्षाकृत सीमित है क्योंकि संसाधनों की कमी, संस्थागत सीमाओं और दीर्धकालीन रणनीति की कमी है| इसके अलावा क्षेत्रीय चुनौतियों और डिजिटल प्लेटफार्म पर प्रतिस्पर्धा ने भारत की सॉफ्ट पॉवर को प्रभावित किया है| आज केवल सॉफ्ट पॉवर ही पर्याप्त नहीं है

बल्कि रक्षा सहयोग, आर्थिक निवेश और तकनीकी नवाचार जैसे शक्तिशाली हार्ड पॉवर संसाधनों को इसके साथ संतुलित करना आवश्यक है|

यही कारण है की कुछ नीतिगत सुझाव महत्वपूर्ण हो जाते है| पहला, भारत को सांस्कृतिक कूटनीति के लिए अधिक संसाधन और संस्थागत सहयोग देना चाहिए| दूसरा, योग, आयुर्वेद, बॉलीवुड और भारतीय कला को वैश्विक स्तर पर और अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए भारत को डिजिटल प्लेटफार्म पर अपनी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करना होगा| तीसरा,दक्षिण-पूर्व एशिया और हिन्द-प्रशांत देशों के साथ गहरे संबंध बनाने के लिए भारत को बौद्ध कूटनीति और ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंधो को दीर्घकालीन योजनाओं से जोड़ना चाहिए| चौथा, भारत को हार्ड पॉवर साधनों के साथ अपनी सॉफ्ट पॉवर को संतुलित करना होगा, ताकि उसकी सांस्कृतिक पहचान रणनीतिक विश्वसनीयता से जुड़ सके| भारत की सॉफ्ट पॉवर और सांस्कृतिक कूटनीति हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में शांति, सहयोग और संतुलन की दिशा में एक निरंतर और स्थायी उपाय है| भारत संसाधनों, डिजिटल नवाचार और हार्ड पॉवर के साथ दीर्घकालीन योजना बनाकर क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर एक प्रभावशाली और विश्वसनीय शक्ति बन सकता है|

Reference:

1. Hussain, S. M. (2023). Actualising soft power through cultural diplomacy: A media, education, and communication perspective. Dogo Rangsang Research Journal, 13(6), 196-205. https://www.journal-dogorangsang.in/no_1_Online_23/29.2_june.pdf
2. Kang, H. (2013). Reframing cultural diplomacy: international cultural politics of soft power and the creative economy. URL: http://www. culturaldiplomacy. org/academy/content/pdf/participant-papers/2011-08-loam/Reframing-Cultural-Diplomacy-International-Cultural-Politics-of-Soft-Power-and-the-Creative-Economy-Hyungseok-Kang. pdf.
3. Zamorano, M. M. (2016). Reframing cultural diplomacy: the instrumentalization of culture under the soft power theory. Culture Unbound, 8(2), 165-186. https://journal.ep.liu.se/CU/article/view/1814
4. Kumar, S. (2024). CULTIVATING SOFT POWER THROUGH CULTURAL INFLUENCE: COMPARATIVE ANALYSIS ON US, INDIA AND JAPAN. INDIA AND JAPAN (April 04, 2024). https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=4881175
5. Nye, J. S. (2021). Soft power: the evolution of a concept. In Essays on evolutions in the study of political power (pp. 196-208). Routledge. https://www.softpowerclub.org/wp-content/uploads/2021/03/Nye-Soft-power-the-evolution-of-a-concept-1.pdf
6. Nye, J. (2017). Soft power: the origins and political progress of a concept. Palgrave communications, 3(1), 1-3. https://www.nature.com/articles/palcomms20178
7. Nye, J. S., Jr. (2004). Soft power: The means to success in world politics. Public Affairs.
8. Mahapatra, D. A. (2016). From a latent to a ‘strong’soft power? The evolution of India’s cultural diplomacy. Palgrave Communications, 2(1), 1-11. https://www.nature.com/articles/palcomms201691

9. Leheny, D. (2006). Soft Power and the Politics of Japanese Popular Culture in East Asia. Beyond Japan: the dynamics of East Asian regionalism, 211. https://books.google.co.in/books?hl=en&lr=&id=V4oY39RofC4C&oi=fnd&pg=PA211&dq=history+of+caltural+diplomacy+and+soft+power+in+indo+pacific&ots=g-uN8ditsx&sig=n_44_Uh1CUDfxilzcSOyjAi3S84&redir_esc=y#v=onepage&q&f=false
10. Lai, H., & Lu, Y. (Eds.). (2012). China's soft power and international relations (Vol. 23). London: Routledge.
11. Bettie, M. (2015). Ambassadors unaware: the Fulbright Program and American public diplomacy. Journal of Transatlantic Studies, 13(4), 358-372.
12. Iwabuchi, K. (2018). Pop-culture diplomacy in Japan: Soft power, nation branding and the question of 'international cultural exchange'. In Cultural Diplomacy: Beyond the National Interest? (pp. 65-78). Routledge. https://www.cultureinexternalrelations.eu/wp-content/uploads/2016/08/Report17.pdf#page=57
13. Purushothaman, U. (2010). Shifting perceptions of power: Soft power and India's foreign policy. Journal of Peace Studies, 17(2&3), 1-16. https://www.researchgate.net/profile/Uma-Purushothaman/publication/228325626_Shifting_Perceptions_of_Power_Soft_Power_and_India's_Foreign_Policy/links/09e414ff67daba01cb000000/Shifting-Perceptions-of-Power-Soft-Power-and-Indias-Foreign-Policy.pdf
14. Dev, Air Marshal Amit (2022). China's rise and the implications for the indo-pacific. Observer Research Foundation. Available at: https://www.orfonline.org/expert-speak/chinas-rise-and-the-implications-for-the-indo-pacific/ (Accessed on 5 September 2023)
15. Babu, R. (2015, June 19). India China and the indo-pacific. Institute of Peace and Conflict Studies. Available at: http://www.ipcs.org/comm_select.php?articleNo=4890 (Accessed on 28 August 2023)
16. Srinivas, J. (2019). Modi's Cultural Diplomacy and Role of Indian Diaspora. Central European Journal of International & Security Studies, 13(2). https://www.researchgate.net/profile/Junuguru-Srinivas/publication/334784150_Modi's_Cultural_Diplomacy/links/5d413885299bf1995b594973/Modis-Cultural-Diplomacy.pdf